शैतान से इण्टरव्यू

मुरत्तिब
मुहसिन हिजाजी
हिन्दी तर्जुमा
मुहम्मद अहमद
सम्पादन
सलीम ख़िलजी

http://salfibooks.blogspot.com

प्रकाशक :

आदर्श मुस्लिम पब्लिकेशन
30, स्टेडियम शॉपिंग सेण्टर, जोधपुर-6
मोबाइल : 99285-92786, 96676-76001

अपनी बात :

शैतान को देखना या उससे इण्टरव्यू लेना एक ख़याली बात हो सकती है लेकिन शैतान की साज़िशें, मक्र व फ़रेब एक हक़ीक़त है. इस किताब के प्रकाशन का मक़सद सिर्फ़ यह है कि लोग शैतान के शर से बचें. इस मुख़्तसर-सी किताब में इबलीस की चालों और साज़िशों से ख़बरदार करने की क़ोशिश की गई है

लेखक की सोच है कि अगर इबलीस से इन्टरव्यू मुमकिन होता तो शायद सवाल—जवाब कुछ इस तरह होते. दरअसल लेखक ने क़ुर्आन व हदीस की किताबों में शैतान का जो नक्शा खींचा गया है, उसकी जो साज़िशें बतलाई हैं, उन्हीं को बुनियाद (आधार) बनाकर इस किताब को तर्तीब दिया है. मुझ नाचीज़ सम्पादक ने इसमें ज़रूरत के मुताबिक़ क़ुर्आन—हदीस की रोशनी में कुछ बढ़ोतरी की है. अगर इसमें कोई कमी नज़र आए तो बराए मेहरबानी तवज्जुह दिलाकर हमारी इस्लाह करें.

इस किताब के छापने का बुनियादी मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ यही है कि लोग अपने कट्टर दुश्मन शैतान इबलीस से बच सकें. इस किताब को कुछ साहिबे—ख़ैर हज़रात ने छपवाकर फ़ी—सबीलिल्लाह बंटवाने का इंतज़ाम किया है. अल्लाह उनके ख़ुलूस को क़ुबूल फ़र्माए और इसका बेहतर अज्र अता फ़र्माए, आमीन!!

वस्सलाम,

सलीम ख़िलजी

शैतान से इन्टरव्यू

सवाल : तुम्हारा नाम ?

जवाबे–शैतान : इबलीस (प्यार से लोग मुझे और अपने बच्चों को शैतान कहते हैं)।

सवाल : इससे पहले कि सवालात का सिलसिला शुरूअ किया जाये एक छोटी-सी बात पर अक्सर भाई बहनों को शिकायत है कि वो अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम भी पढ़ते हैं, मगर तुम हो कि जाते ही नहीं।

जवाबे–शैतान : कमाल है तुम कहते हो कि मैं जाता नहीं मै कहता हूँ कि मैं आता ही नहीं।

सवाल : भला ये क्या बात हुई? इन्टरव्यू से पहले तुम ख़ुद ही कह रहे थे कि तुम्हारे पास वक़्त कम है और मुक़ाबला सख़्त है। अब ख़ुद ही हंसी मज़ाक में वक़्त ज़ाया (बर्बाद) कर रहे हो।

जवाबे–शैतान : मज़ाक करना तो जाहिलों का काम है शायद तुम मेरी बात पूरी तरह समझ नहीं पाये। फिर से दोहरा देता हूँ, तुमने कहा कि अक्सर लोग शिकायत करते हैं कि **अऊज़ु बिल्लाह** पढ़ने से मैं जाता नहीं, मैंने जवाब दिया मैं आता ही नहीं। लो सुनो अभी समझा देता हूँ तुमने किसी उम्मीदवार को इलेक्शन मुहिम के दौरान वोट मांगने तो ज़रूर देखा होगा। इलेक्शन तो हमारे हमारे यहाँ हर रोज़ का ड्रामा है। उम्मीदवार साहब टी-पार्टी (चाय पार्टी) के चंद मेम्बरों को साथ लेकर घर-घर वोट मांगते फिरते हैं ज्योंही एक साथी किसी घर की घंटी बजाने लगे उम्मीदवार साहब फ़ौरन चौंके और कहने लगे कि घंटी बजाकर वक़्त ज़ाया (बर्बाद) न करो इधर जाने की ज़रूरत नहीं ये अपना ही आदमी है। भोले भैया इसी तरह तुम भी मेरे अपने ही आदमी हो।

सवाल : मेरा पहला सवाल क्या तुम बताना पसन्द करोगे कि तुम मरदूद क्यों ठहराये गये और हमेशा बदबख़्ती तुम्हारे हिस्से कैसे आई? तुम्हारा पिछला रिकॉर्ड देखते हुए उम्मीद तो नहीं मगर हो सके तो पूरा वाक़िया सच-सच सुनाना।

जवाबे–शैतान : जाओ आज तुमसे वादा करता हूँ कि जो कुछ कहूँगा सच कहूँगा सच के सिवा कुछ नहीं कहूँगा। वैसे ये लफ़्ज़ पहली मर्तबा मेरी ज़बान से अदा हो रहा है वर्ना अदालतों में अक्सर मेरे साथी हाथों में क़ुर्आन लेकर रोज़ाना इस लफ़्ज़ को बार-बार कहते

हैं। ये जो तुमने कहा कि पूरा वाकिया सच-सच सुनाना तुम्हारी ये बातें सुनकर हैरान हो रहा हूँ कि शक्लों-सूरत से तुम बहुत पढ़े-लिखे नज़र आते हो मगर लगता है कि मेरे ही मतलब के किसी स्कूल के तालीमयाफ़्ता (शिक्षित) हो। अच्छा एक बात बताओ, क्या अल्लाह से बढ़कर किसी की बात सच्ची हो सकती है।

सवाल करने वाला- नहीं!

जवाबे–शैतान : झूठ बोलते हो। यदि तुम्हें यक़ीन होता है कि सबसे सच्ची बात अल्लाह की है तो ऐसा सवाल करने की जुर्रत न करते। बेवकूफ़ अल्लाह ने तो तुम्हें आज से डेढ़ हज़ार साल पहले कायनात की सबसे सच्ची ज़बान, यानी ज़बाने मुहम्मद (ﷺ) के ज़रिये पूरा वाक़िया हर्फ़ ब हर्फ़ सुना दिया था। जो तुममें से हर एक के घर आज भी बिल्कुल इसी तरह लिखा हुआ मौजूद है। अफ़सोस! कि आज तक तुम्हें फ़ुर्सत न मिल सकी कि तुम इस किताब को खोलकर देख सको। जिसमें ये वाक़िया दर्ज है। मेरे ही कहने के मुताबिक़ तुमने इसे ख़ूबसूरत चमकीले से मोअत्तर ग़िलाफ़ में लपेटकर ऊँची जगह रख दिया जहाँ छोटे क्या बड़ों का भी हाथ नहीं पहुँचता। अगर किसी के घर इतनी ऊँची जगह न हो और वो किसी फ़ुर्सत के मौक़े पर खोलकर देख ही ले तो उस बेचारे को कुछ समझ ही नहीं होती कि उसमें क्या लिखा है। माशाअल्लाह! अक़ीदत हो तो ऐसी, देख लो अपनी हालत वाक़िया क़ुर्आन का और सुनाने मैं तुम्हें लगा हूँ। घबराओ मत तर्जुमा करके सुनाऊंगा।

बहुत पहले की बात है, एक दिन अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों से कहा कि, 'मैं ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा (नाइब) बनाने वाला हूँ तो जब मैं उसे बना दूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूँ तो सब उसको सज्दा करना।' सबने सज्दा किया सिवाए मेरे, क्योंकि मैंने सज्दा करने से मना कर दिया। अल्लाह तआला ने कहा, 'क्या वज़ह है कि तूने सज्दा नहीं किया? जबकि मैंने तुझको हुक्म दिया।' मैंने कहा, 'मैं उससे बेहतर हूँ, तूने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से।' अल्लाह तआला ने कहा, 'निकल जा यहां, बेशक तू मरदूद है और क़यामत तक तुझ पर लअनत है।' मैंने कहा, 'मुझे क़यामत तक की मोहलत चाहिए।' अल्लाह तआला ने कहा, 'जा, तुझे मोहलत दी जाती है।' मैंने कहा, 'मैं लोगों को तेरे सीधे रास्ते से गुमराह करने करने के लिये ज़रूर उनकी ताक़ में बैठूंगा और उन्हें बहकाने के लिये उनके पास जाऊंगा। उसके आगे से पीछे से, दांये से बांये से और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार न पायेगा।' अल्लाह तआला ने कहा, 'जिस किसी ने तेरी पैरवी की तो यक़ीनन तुम सबसे जहन्नम को भर दूंगा।'

ये थी अस्ल सूरते हाल। अब तो तुम्हें पता चल गया होगा कि मैं मरदूद क्यों ठहरा।

अब मुझे लअ़नती और मरदूद कहने वालों! दूसरों की आँख में पड़ा तिनका भी तुम्हें नज़र आ जाता है और अपनी आँख में शहतीर नज़र नहीं आता। कभी अपनी करतूतों पर भी ग़ौर किया तुमने। मैंने तो अल्लाह के हुक्म पर एक सज्दा नहीं किया तो मुझे शैतान और लअ़नती कह दिया गया। तुम्हें तो अल्लाह तआला हर रोज़ पाँच मर्तबा सज्दे के लिए बुलाता है तुम हर रोज़ पाँचों मर्तबा मना कर देते हो क्या फिर तुम मुझसे बड़े शैतान न हुए। मेरे साथ जो हुआ सो हुआ तुम बताओ क़यामत के दिन तुम कितने बड़े लअ़नती क़रार पाओगे।

नादानों! मैंने अल्लाह के सामने क़सम खाकर चैलेंज किया कि तुम लोगों को छोड़ूंगानहीं। ज़रूर अपने साथ जहन्नम में ले जाऊंगा। अब कैसे मुसलमान हो तुम? ये क़द्र की तुमने? अल्लाह के सामने किये गये मेरे उस चैलेंज को सच्चा साबित करने में तुम ऐड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहे हो। तुम्हारी ज़बानें तो गवाही नहीं देती मगर तुम्हारी मुनाफ़िकाना हरकतें बताती है कि मैं उस वक़्त हक़ पर था। तुम्हारे ही बारे में अल्लाह ने कहा, **'लोगों ने अल्लाह की क़द्र नहीं पहचानी जैसा कि क़द्र पहचानने का हक़ है।' और ज़रा अपनी शक्लें और अपने करतूत देखो। इस तरह के होते हैं अल्लाह के नाइब?**

सवाल : तुम तो दूसरों को गुस्सा दिलाने वाले हो आज ख़ुद गुस्से से काँप रहे हो। लो पानी पियो, अभी तो बहुत से सवालात बाक़ी है। मेरा अगला सवाल है कि हमारे प्यारे पाक पैग़म्बर (ﷺ) के पाक फ़र्मान के मुताबिक़ रमज़ान में तुम्हें क़ैद कर दिया जाता है मैं पूछना चाहूँगा कि तुम दौराने क़ैद में भी कोई दांव चलाने की कोशिश करते हो?

जवाबे–शैतान : बड़ा दिलचस्प सवाल किया तुमने इसमें शक नहीं कि रमज़ान में वाक़ई मुझे क़ैद कर दिया जाता है। (हँसते हुए) मगर तुम लोग तो क़ैद नहीं होते तुम्हारे जैसे ख़ैर-ख़्वाहों के आज़ाद फिरने से रमज़ान में भी मेरा कुछ-न-कुछ कारोबार चलता रहता है अगर मेरा काम बिल्कुल बंद भी हो जाये तो परवाह नहीं, बस ईद का चाँद नज़र आने की देर होती है, पूरे रमज़ान की कसर सिर्फ़ इसी एक रात में निकाल देता हूँ। मिसाल के तौर पर पूरे रमज़ान के रोज़े रखने वाली 'नेक ख़्वातीन' जब चाँद-रात को गाढ़े मेकअप में लथपथ बेपर्दा बाज़ार जाकर चूड़ीगर (अस्ल में वो चूड़ीगर के दोस्त होते हैं जो पूरा साल इस मौक़े के ताक़ में रहते हैं) के हाथ में अपना हाथ देती है तो अल्लाह की क़सम! तुम्हारे वहम में भी कुछ न होगा कि अल्लाह उस वक़्त कितना गज़बनाक होता है; और मैं! उस वक़्त ख़ुशी से झूम रहा होता हूं। वाह! क्या अजब समाँ होता है उस वक़्त? आँखों से ज़िना, हाथों से ज़िना, कानों से ज़िना, ज़बान से ज़िना इसलिये कि उस वक़्त उन दोनों में तीसरा मैं होता हूँ।

पास उन औरतों के शौहर, बाप या भाई खड़े देख रहे होते हैं। वैसे अजीब उल्टी

खोपड़ी के मालिक होते हो तुम लोग। **अगर चूड़ीगर के अलावा कोई और इस तरह के भरे बाज़ार में तुम्हारी बहन, बेटी या बीबी का हाथ पकड़ ले तो फ़ायरिंग शुरू करते हो, बाज़ार बंद, लाशों के ढ़ेर, हड़ताल! मगर उस वक़्त तुम्हारी ग़ैरत पता नहीं कहां गई होती है।**

फिर चाँद रात तकरीबन हर घर, गली, मोहल्ले और बाज़ारों में इण्डियन गानों की गूंज कान फटे आवाज़ सुनाई नहीं देती। गलियों और बाज़ारों में नौजवान लड़के–लड़कियों की गहमा–गहमी ये सब देखकर मुझे बेइख़्तियार हंसी आ जाती है कि देखो क़ुर्आन और हदीस पर ईमान के इन झूठेदावेदारों को। क्या क़ुर्आन में अल्लाह तुम्हें नहीं कहता कि मैं यानी शैतान तुम्हारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन हूं? क्या हदीस में तुम्हारे नबी मुहम्मद (ﷺ) का फ़र्मान नहीं पढ़ा कि रमज़ान में मुझे क़ैद कर दिया जाता है? फिर चाँद रात तुम्हारा इस तरह जश्न मनाना? **अक्ल के अंधों! जब दुश्मन क़ैद से आज़ाद होता है तो इस तरह गाने लगाकर खुशियाँ मनाते हैं सच तो यह कि तुमने मुझे दुश्मन समझा ही कब है? मेरी रिहाई पर तुम्हारी ख़ुशी, ये इस्तकबाल करना, ये सब कुछ साबित करता है कि तुम मुझसे कितनी मोहब्बत रखते हो।** बहरहाल, अब तक तुम लोगों ने मेरा बहुत साथ दिया अल्लाह ने चाहा तो हमारा ये साथ जहन्नम में भी बरक़रार रहेगा।

सवाल : अल्लाह जाने लोग तुम्हारी दोस्ती पर कैसे यक़ीन कर लेते हैं। तुम्हारे तो एक-एक लफ़्ज़ में इन्सानी दुश्मनी की बू आ रही है। जी तो नहीं चाहता कि तुमसे मज़ीद सवाल करूं मगर ..... बहरहाल यह बताओ कि तुम्हारी ज़िन्दगी का कोई ऐसा वाक़िया जहाँ तुम्हें बुरी तरह नाकामी का सामना करना पड़ा हो और तुम्हारा हर हरबा नाकाम हो गया हो?

जवाबें–शैतान : बड़ा तकलीफ़देह सवाल है ये उस वक़्त की बात है जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने ख़्वाब में दिखलाया कि वो अपने प्यारे बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम को जिब्ह कर रहे हैं। मुझे पहले ही वो बात बड़ी चुभती थी जो अल्लाह तआला ने क़ुर्आन से बयान फ़र्माई कि इब्राहीम को जिन बातों में भी आज़माया गया उसने सबकी सब बातें पूरी करके दिखाई। एक दिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे से कहा, 'बेटा, मैंने ख़्वाब में देखता हूं कि मैं तुम्हें जिब्ह कर रहा हूं तुम्हारी क्या राय है?' बेटे ने जवाब दिया, 'ऐ अब्बाजान कर गुज़रिये जिसका आपको हुक्म दिया गया है। अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे ज़रूर सब्र करने वालों में पायेंगे।' दोनों बाप बेटे तड़के-तड़के घर से रवाना हो गये। बेटा अपनी जवानी, अपना हुस्न, अपनी उम्मीदों और उमंगों

की दुनिया कुर्बान करने के लिये खुशी-खुशी जा रहा था और बाप अपनी सौ साल की दुआओं का बेहतरीन फल अपने लख्ते जिगर और नूरे नज़र को कुर्बान करने जा रहा था। दोनों बड़े खुश और बेहद मसरूर।

मैंने सोचा आज तक इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुझे हर क़दम पर तकलीफ़ पहुंचाई आज अगर इसका बना-बनाया खेल बिगाड़कर न रख दूं तो इबलीस मेरा नाम नहीं। दौड़ता हुआ उनके घर पहुंचा हजरत हाजरा तशरीफ़ फ़र्मा रही थी। पूछा, 'मियां जी कहां है और नन्हा इस्माईल आज नज़र नहीं आ रहा है।' हाजरा ने बताया, 'दोनों बाप-बेटे सैरो-तफ़रीह के लिये बाहर गये हुए हैं।' मैंने कहा, 'नहीं तुम धोखे में हो इब्राहीम आज तुम्हारे बच्चे को जिब्ह करने के लिये गया है। दौड़ो! और अपने बच्चे को बाजू से पकड़ लो वर्ना चन्द लम्हों बाद उसकी लाश पर मातम करती रहोगी।' हाजरा कहने लगी, 'कभी बाप भी अपने बेटे को क़त्ल करता है और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को तो अपने इस बेटे से बड़ा प्यार है तुम झूठ बक रहे हो निकलो यहां से।' मैंने कहा, 'तुम भोली बनी बैठी हो वो आज ज़रूर तेरे बच्चे को जिब्ह कर देगा।' फिर अचानक मेरे मुंह से निकल गया कि उसके रब ने उसे हुक्म दिया है। तो ये सुनने की देरी थी कि हाजरा ने जवाब दिया, 'अगर रब्बे करीम का हुक्म है तो मुझे कोई ऐतराज नहीं ये तो एक इस्माईल है अगर हज़ार इस्माईल हो तो उसके एक इशारे पर कुर्बान कर दूं।' माँ का दिल बड़ा नर्म होता है। यहां मुझे अपनी कामयाबी की सौ फ़ीसद उम्मीद थी लेकिन मुंह की खाई मैंने हिम्मत न हारी दौड़ता हुआ इस्माईल के पास पहुंचा वहां से भी इसी क़िस्म का जवाब मिला हिम्मत करके आख़िरी वार आज़माने के लिये इब्राहीम अलैहिस्सलाम से जाकर उलझ पड़ा और कहा कि इतने अक्लमंद हो बच्चे को जिब्ह करने चले हो ये कहां कि होशमंदी है? अल्लाह तआला को राज़ी करने के और सैकड़ों तरीके हैं, बुढ़ापे में एक बच्चा मिला वो भी इतना हसीन जिसे देखकर चाँद शर्मा जाये उसको जिब्ह करने चले हो। तुम्हारा तो नाम लेने वाला कोई नहीं रहेगा, नस्ल खत्म हो जायेगी, ख़ानदान मिट जायेगा और ये जो ख़्वाब-ख़्वाब की रट लगा रखी है ये शैतानी वस्वसा भी हो सकता है अगर अल्लाह को यह हुक्म देना होता तो जिब्रईल अलैहिस्सलाम आपके पास हुक्म लेकर आते। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ज़मीन से पत्थर से उठाया और मुझे दे मारा तीन बार। मेरे साथ ऐसा ही सुलूक किया मेरी आँखें खुल गई मुझे पता चल गया कि आज अल्लाह तआला के किसी नेक बन्दे के साथ वास्ता पड़ा है।

इसी वाक़िये की सुन्नत के तौर पर इतने इतने महंगे और चार-चार, पांच-पांच जानवर कुर्बान करते हो मगर मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम्हारी इन कुर्बानियों के पीछे जज़्बा कार फ़र्मा होता है। परले दर्जे के रियाकार हो तुम लोग अगर नहीं तो रिश्वत लेना-देना, गालियां बकना, झूठ बोलना, गाने सुनना, ड्रामे और फ़िल्मे देखना, चुगली खाना,

मज़ाक़ उड़ाना, सारा सारा दिन ताश और शतरंज खेलना। कर दो ऐलान कि आज हमने अपने अल्लाह की ख़ातिर ये आदतें भी कुर्बान कर दी ये नहीं करते और जानवर इसलिये कुर्बान करते हो कि इसमें अपना नाम होता है मशहूर होते हो।

सवाल : चलते-चलते तुमसे जरा उमर के बारे में पूछता चलूं?

जवाब- बस—बस मैं चला बाबा मुझे तो उनसे बहुत डर लगता है।

सवाल : अरे कहाँ जा रहे हो? सुनो तो सही किससे डर लगता है?

जवाब- उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से।

सवाल : पागल हो गये मैंने तुम्हारी उमर के बारे में पूछा था।

जवाबे—शैतान : अच्छा! मेरे तो हाथों के तोते उड़ गये। मैं समझा शायद उमर रज़ि. की बात करने लगे हो। अल्लाह की क़सम मुझे तो उनके साये से भी डर लगता है। यक़ीन करो जिस रास्ते से उमर रज़ि. आते मैं वो रास्ता ही तब्दील कर लेता था इतनी दहशत थी उनकी। आह! एक वो शख़्सियत थी जिसके तक़वा और कुव्वते ईमानी से डरते हुए मैं रास्ता बदल लेता था और एक तुम हो कि बेहयाई में इतनी दूर निकल गये हो कि अक्सर को देखकर मैं शर्म से मैं रास्ता बदल लेता हूं। रहा तुम्हारा मेरी उमर के मुताल्लिक सवाल तो क्या तुम और तुम्हारी बीवियां अपनी मुबारक उमर बताते हो जो मैं अपनी उमर बताऊं। उमर के बारे में इतना कहूंगा कि मुझे वो तमाम काम पसंद है जो तुम्हें जवानी में पसंद होते हैं। कोई और सवाल रह गया हो तो भाई ज़रा जल्दी पूछ लो।

सवाल करने वाला- मुँह सम्भालकर बात करो ख़बरदार जो मुझे भाई कहा।

जवाबे—शैतान : क्या ग़लत बात कही दी मैंने? जो इस तरह आपे से बाहर हो रहे हो। जवाब- मैंने तो कुर्आन के मुताल्लिक बात कहीं है। यक़ीन न आये तो जाओ और देख लो सूरह बनी इस्राईल आयत नम्बर 27 में अल्लाह तुम्हें क्या कहता है? शबे मेअराज और शबे बारात के मौक़े पर जब अपने बच्चों को सैंकड़ों के हिसाब से फुलझड़ियां, हवाइयां और पटाखे लाकर देते हो। बसन्त के मौक़े पर हजारों की पतंगे और धागे, शादी के मौक़े पर बैण्डबाज़े, आतिशबाज़ी, चरागां, मेहन्दी की रस्म और वीडियो वग़ैरह। **निकाह को तुम्हारे नबी ने अपनी सुन्नत करार दिया था, अपनी बेटियों की शादी सादगी से की थी। उनकी मौजूदगी में सहाबा की शादियाँ सादगी से हुई थीं; लेकिन तुम लोग करते हो अपने बच्चों की सादगी से शादी? दुनिया भर की फिजूलख़र्चियाँ करते हो और ख़ुद को आखरी नबी का उम्मती कहते हो। जाओ! जाकर कुर्आन देख लो अल्लाह ख़ुद फिजूलखर्ची करने वालों को यानी तुम्हें मेरा भाई क़रार**

देता है। अब मेरे मुंह से भाई लफ़्ज़ निकल गया तो कौनसी आफ़त आ गई?

सवाल : अच्छा ये बताओ तुम आम तौर पर मिलते कहाँ हो?

जवाबे–शैतान : बड़ा सादा-सा एड्रेस है मेरा– मस्जिदों के बाहर, मदरसों के बाहर, दर्से कुर्आन, दर्से हदीस और नेक मजलिसों के बाहर। इन जगहों पर मेरी मौजूदगी की दलील अपनी मस्जिदों की हाजिरी देख लो और रहा दर्से कुर्आन वो तो वैसे ही आहिस्ता-आहिस्ता कम होता जा रहा है। इत्तेफ़ाक़ से जहां होता है वहां इतने इश्तेहारात और बार-बार के ऐलानात के बावजूद गिनती के चंद बुजुर्ग अफ़राद मेरी मौजूदगी की दलील है।

सवाल : अजीब बात है तुम्हें तो किसी सिनेमाघर, थियेटर या नाच-गाने की महफ़िलों के बाहर होना चाहिए था।

जवाबे–शैतान : तुम तो पढ़े-लिखे बेवकूफ़ हो मुझे क्या पागल कुत्ते ने काटा है या मैं तुम्हारी तरह इतनी फ़ुर्सत में हूं कि सिनेमाघर के बाहर बैठा मक्खियां मारता रहूं मेरा तो सिर्फ़ इतना ही काम होता है कि तुम्हें इशारा करूं कि फ़लां सिनेमा बड़ी अच्छी फिल्मे दिखाता है ज़रूर चलना चाहिए। अल्लाह की क़सम! तुम वहां मुझसे भी पहले पहुंच जाते हो। पांच सात सौ अफ़राद अन्दर और दरवाज़े बन्द अब बताओ मेरा वहां क्या काम? मेरा काम तो तुम्हें दीनी मजलिसों, मदरसों और मस्जिदों से दूर करके बेहयाई के अड्डों की तरफ़ भेजना है। जब तुम वहाँ पहुँच जाते हो तो मेरा काम बन जाता है। कमबख़्तों! सिनेमा में जाकर तुम कौनसी नमाज़ पढ़ते हो या दीन की बातें करते हो जो मैं वहाँ आऊँ। वैसे भी सिनेमा, थियेटर, नाच–गाने की महफ़िलें, जुआघर वगैरह सब मेरे अपने ही ठिकाने हैं। तुम ख़ुद अपने पैरों से चलकर मेरे घर के अन्दर आते हो, मेरे लिये इससे ज़्यादा अच्छी बात और कौनसी हो सकती है?

सवाल : तुमसे ये पूछना याद ही नहीं रहा कि तुम्हारी ख़ुराक क्या है? यानी खाते क्या हो?

जवाबे–शैतान : बस जी तुम जैसे दोस्तों की मेहरबानी है मुर्गे का गोश्त, बकरे का गोश्त, कबाब, मछली, बिरयानी वग़ैरह-वग़ैरह खाने को मिल जाता है।

सवाल : अजीब बात है कहां से खरीदते हो ये सब कुछ?

जवाबे–शैतान : तुम्हारे होते हुए मुझे क्या पड़ी कि पैसे खर्च करूं जब तुमने अपने सामने किस्म-किस्म के खाने बग़ैर बिस्मिल्लाह पढ़े चट कर जाते हो। उस वक़्त तुम अपने मुंह

में जो कुछ डालते हो दर हक़ीक़त उसका एक-एक लुकमा मेरे पेट में जा रहा होता क्या चटपटे खाने होते है वाह! वाह–वाह!!

सवाल : इस बात की कोई दलील है?

जवाबे–शैतान : शर्म आनी चाहिए तुम्हें! तुम अपने नबी (ﷺ) के फ़र्मान के बाद भी दलील मांगते हो फिर भी तसल्ली न हो तो अभी समझाए देता हूँ। इतनी अच्छी गिज़ाएं खाने के बावजूद तुम्हारे जिस्मों में रत्ती भर भी ताक़त नहीं अगर तुम ख़ुद खाते तो तुममें हिम्मत न होती?

सवाल : कोई ऐसा गुनाह जिसके बारे में तुम्हारे शदीद ख़्वाहिश हो कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग इस गुनाह में मुलव्विस हो?

जवाबे–शैतान : गुनाह बड़ा हो या छोटा मैं तो कोई भी मौक़ा हाथ से जाने नहीं देता अलबत्ता शिर्क ऐसा गुनाह है कि जिसमें मुबतला करने के बाद में उस शख़्स से मुतमईन हो जाता हूँ कि अब मेरी मेहनत ज़ाया जाने का कोई इम्कान नहीं। बाक़ी गुनाहों पर मेहनत रायगाँ जाने का अन्देशा होता है कि अल्लाह जिसके जितने चाहे गुनाह मुआफ़ कर दे, मगर शिर्क एक ऐसा गुनाह है जो मुआफ़ नहीं होगा। यही तो मेरी अस़ल कमाई है एक बड़ी दिलचस्प बात बताऊँ शिर्क तो बहुत बड़ी बात है जब तुम्हारे बच्चे स्कूल में कोर्स की शक्ल में पढ़ते हैं सनडे, मनडे, ट्यूज़डे या मई या जून, जुलाई, मेरा कलेजा तो इससे ठण्डा हो जाता है।

सवाल : इसमें ख़ुशी की कौनसी बात है? ये तो आम दिनों और महीनों के नाम ही तो है?

जवाबे–शैतान : है तो दिनों और महीनों के नाम मगर वज़ाहत सुनोगे तो समझ जाओगे कि मुझे ख़ुशी किस बात की होती है। ग़ौर से सुनना अगर हो सके तो अपने बच्चे को भी बता देना। सनडे (सूरज देवता का दिन), मनडे (चाँद देवता का दिन), ट्यूज़डे (जंग के देवता का दिन), थर्सडे (बादलों के गरज के देवता थार का दिन), फ़्राईडे (मोहब्बत की देवी फ़्राईगा का दिन)। अब महीनों के नाम ही ले लो, मई (रोमन देवता मेटिया), जून (शादी की देवी जूनू), जुलाई (रोमी शंहशाह जूलियस सीजर), अगस्त (रोमी बादशाह आगस्टस) यानी तमाम दिनों और महीनों के नाम देवी और देवताओं के नाम पर है। ये वो दिन और महीने है जिनमें उनकी पूजा (इबादत) होती थीं अब ये बताओ मेरे लिये ख़ुशी का मौक़ा है या नहीं।

सवाल : इसके अलावा और कौन–कौनसे गुनाह तुमको पसन्द हैं?

जवाबे–शैतान : मैंने कहा न मुझे हर गुनाह वाला काम पसन्द है, अब तुमने पूछ ही लिया है तो मैं बता देता हूँ कि शिर्क के अलावा मुझे कौन–कौनसे गुनाह ज़्यादा पसन्द हैं, उन सबको मैं सिलसिलेवार बतलाता हूँ :–

01. **कुफ़्र :** चूँकि कायनात का सबसे पहला काफ़िर मैं इबलीस यानी शैतान हूँ इसलिये गुनाहे–कुफ़्र से मुझे दिली लगाव है। हर काफ़िर, मेरा यानी शैतान का पक्का व सच्चा दोस्त है।

02. **फ़िस्क़ :** यानी अल्लाह की नाफ़र्मानी भी मेरा पसन्दीदा काम (गुनाह) है क्योंकि कायनात का सबसे पहला फ़ासिक़ भी मैं इबलीस ही हूँ।

03. **बिदअत :** चूँकि हर बिदअत को तुम्हारे नबी ने गुमराही करार दिया है और यह भी कहा है कि गुमराही जहन्नम में ले जानी वाली है, इसलिये तमाम गुनाहों में मुझे बिदअत भी बहुत पसन्द है। आख़िर मेरा काम ही यही है कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जहन्नम में ले जाऊँ।

04. **जादू–टोना :** जादूगर पर जन्नत हराम है, इसलिये हर जादूगर मेरा एजेण्ट है। हाय! क्या सीन होता है जब तुम जैसे शरीफ़जादों के घर की औरतें किसी को बस में करने के लिये या किसी में नफ़रत पैदा करके जुदाई डालने के लिये जादू–टोना करवाती है। बहुत से जादूगर मौक़ा देखकर तुम्हारी औरतों से फायदा उठाते हैं।

05. **हसद :** यानी ईर्ष्या या जलन भी मेरा पसन्दीदा काम है. क़ुर्आन की सूरह फ़लक़ में हासिदों की हसद पर अल्लाह की पनाह तलब करने का हुक्म दिया गया है। इज़्ज़त, शोहरत, इल्म, दानिश्वरी, अक़्ल, ख़ूबसूरती या माल–दौलत देने वाला अल्लाह है। **अब अगर कोई इन्सान दूसरे इन्सान से उस नेअमत पर हसद करता है तो गोया वो अल्लाह पर ऐतराज जताता है कि अल्लाह ने तुझे यह चीज़ क्यों दी, मुझे क्यों नहीं दी? इसी हसद की वजह से मैंने आदम को सज्दा नहीं किया था; इसी हसद की वजह से मुझे लानती, मर्दूद और शैतान कहा गया। इसलिये हर हसदख़ोर इन्सान मेरा भाई और मेरा ख़ास साथी है।**

06. **सूदख़ोरी :** ब्याज खाने वाले को अल्लाह ने क़ुर्आन में कड़ी चेतावनी दी है। ब्याज खाने वाले के खिलाफ़ अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से जंग का ऐलान है।

07. **ज़िना :** जब कोई इन्सान ज़िना करता है उस वक़्त उसका ईमान उसके अन्दर से निकल जाता है और ज़िना को अल्लाह के नबी ने भी कबीरा गुनाह (महापाप) कहा है।

08. **मियाँ–बीवी के बीच जुदाई (यानी तलाक़) :** मियाँ–बीवी के बीच झगड़ा कराना मेरा ख़ास काम है। मैं अपने उस शागिर्द से बहुत ख़ुश होता हूँ जो किसी शादीशुदा जोड़े में तलाक़ करवा देता है। मेरा इस कारनामे के बारे में तुमने हदीस की किताबों में पढ़ा होगा या तक़रीरों में सुना होगा।

09. **नशा :** किसी नशेड़ी को गुनाह के दलदल में धकेलना बहुत आसान होता है। शराब, जुआ, बुत और पाँसे को अल्लाह ने गन्दे शैतानी काम कहा है। शराब को अल्लाह के रसूल ने उम्मुल ख़बाइस यानी बुराइयों की माँ कहा है। इसलिये मैं यानी शैतान ज़्यादा से ज़्यादा इन्सानों को नशेड़ी बनाने की कोशिश करता हूँ।

10. **जुआ :** यह एक ऐसा काम है कि जिसको इसकी लत लग जाए तो वो अपनी पूरी दौलत यहाँ तक कि बीवी–बच्चों को भी दाँव पर लगा देता है। जीता हुआ जुआरी हारे हुए की बीवी को सरेआम नंगा करने की कोशिश करता है। उस वक़्त मुझ शैतान के कलेजे में ज़बरदस्त ठण्डक पड़ती है।

11. **बुतपरस्ती :** यह मेरा सबसे पसन्दीदा काम रहा है। मैंने हर नबी की उम्मत को इसी के ज़रिये गुमराह किया है। सबसे पहले मैंने इन्सानों को अपने बुज़ुर्गों की मुहब्बत का जज़्बा दिल में जगाकर उनकी मूर्तियाँ व तस्वीरें बनाने पर उभारा; फिर उस मुहब्बत को अक़ीदत में बदलकर उनकी पूजा करवानी शुरू कर दी। जैसे ही इन्सानों ने मूर्तियों की पूजा शुरू कर दी, उनका ईमान पूरी तरह ख़त्म हो गया।

12. **तकब्बुर :** यानी घमण्ड वो गुनाह है जिसके मुर्तकिब पर जन्नत हराम है। वैसे मैंने अल्लाह की जो नाफ़र्मानी की थी वो अपनी फ़ज़ीलत के घमण्ड में आकर ही तो की थी।

इन सबके अलावा और सारे गुनाह भी मुझे पसन्द हैं जिनमें ग़ीबत, चुग़ली, अमानत में ख़यानत, मुनाफ़िक़त, चोरी, डकैती, धोखाधड़ी, हरामख़ोरी, मिलावट, कम तौलना, रिश्वत, वग़ैरह शामिल हैं।

सवाल : आजकल कमर्शियलिज़्म का दौर है हर कोई अपने काम में नित नई तब्दीलियाँ लाता है क्या तुम भी अपने काम में नई तरकीब पैदा करते हो।

जवाबे–शैतान : बड़े होशियार बनते हो आहिस्ता-आहिस्ता करके मेरे सारे गुर पूछते जा रहे हो कुछ बातें बताने से कारोबार मंदा पड़ जाता है। बहरहाल कोई बात नहीं तुम्हें अल्लाह और उसके नबी (ﷺ) ने भी मेरे बहुत-सी चाल से आगाह किया तुम उससे फ़ायदा न उठा सकें मेरे बताने से क्या बचाव करोगे? तुम तो बड़े मज़े से टांग पर टांग पर बैठे हो मगर मुझे यक़ीन है कि क़यामत आने वाली है, लिहाज़ा मैं हर वक़्त मसरूफ़ हूँ कि कोई जाने न पाए वक़्त कम है इसलिये सिर्फ़ एक ही तरीक़–ए–वारदात का ज़िक्र करूंगा।

पहले पहल लोग थैले में रखे तीरों पर नम्बर लगाकर जुआ खेलते थे फिर कच्ची ज़मीन पर लाईने या डब्बे लगाकर, मैंने महसूस किया कि कुछ लोग इसमें अपनी ज़िल्लत

व रूस्वाई समझते हैं मैंने थोड़ा-सा नयापन पैदा किया ताश को आम कर दिया ताकि लोग अच्छे कॉलिजों या मेज़-कुर्सियों पर बैठकर जुआ खेलें। मगर कुछ नादान दोस्तों ने गलियों, बाज़ारों और दुकानों के बाहर बैठकर ताश खेलना शुरू कर दिया जिसे हर कोई बुरा समझने लगा और आम आदमी मेरे काबू से बाहर होने लगा। मैंने बहुत ही जदीद और महफ़ूज़तरीन तरीक़ा इस्तेमाल किया है। जनाब ये क्या हो रहा है? जी ये क्रिकेट मैच हो रहा है। एक लाख के करीब मजमा शायद ही कोई बेवकूफ़ हो जिसने जुए पर रकम न लगा रखी हो। देख लो एक तीर से कितने शिकार करता हूँ, पहले डिश टीवी से बदकारी फ़हाशी और बेपर्दगी जैसे काम लेता था मगर अब जुए में बहुत काम दे रही है। मैच इंग्लैंड में हो रहा है और जुआ हिन्दुस्तान बल्कि तुम्हारे शहर के गली मोहल्लों में हो रहा है। अगर मैच हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और शारजाह में हो तो मौज बन जाती है। फिर जुआ के अलावा तकरीबन एक लाख अफ़राद को जुम्आ की नमाज़ से रोके रखता हूँ अस्र की नमाज़ भी वहाँ गुज़र जाती है। मग़रिब की नमाज़ स्टेडियम के बाहर निकलते अफ़रा-तफ़री में गई, ईशा की नमाज़ थकावट की वज़ह से और फ़ज्र में नीन्द न खुल सकी। बड़े-बड़े नमाज़ी लोग मैच की वज़ह से मेरे काबू में आ जाते हैं। यक़ीन करो मुझे उस वक़्त बड़ा डर लगता है कि स्टेडियम पर कहीं आसमान से आग बरसनी न शुरू हो जाये कि इधर ख़ुत्ब–ए–जुम्आ हो रहा है और उधर एक लाख के करीब पक्के मुसलमानों का जमघट गाने, नारे, छन-छन और शोर शराबे में मसरूफ़ मैच का मज़ा ले रहे होते हैं।

सवाल : बार-बार घड़ी की तरफ़ देख रहे हो ख़ैर तो है?

जवाबे–शैतान : ख़ैर ही तो नहीं है, तुमने राडो पहनी होती है लोगों को दिखाने के लिये। घड़ी का सही इस्तेमाल तो मैं करता हूँ। मेरा तो एक-एक सैकण्ड क़ीमती होता है तुम्हारा क्या है? तुम जहां मदारी लगी देखते हो घंटों वहीं खड़े रहते हो।

सवाल : बस आख़िरी सवाल जाते-जाते ये बताते जाओ कि कौनसे ऐसे मौक़े हैं, जहां तुमसे बचना बहुत-ही मुश्किल होता है?

जवाबे–शैतान : वैसे तो हर जगह एक जैसी मेहनत करता हूँ मगर चंद मौक़े ऐसे है कि कोई माई का लाल बचता है।

01. जब कोई ग़ैर महरम मर्द और औरत अकेले होते हैं, उस वक़्त मेरे दांव से बचना इंतहाई मुश्किल होता है। पहले ऐसे मौक़े पैदा करने के लिये जहां मर्द व ज़न इकट्ठे हो मुझे सख़्त मेहनत करना पड़ती थी अब तो ये सिलसिला हर जगह ब-आसानी दस्तियाब है।

02. जब कोई गुस्से में हो तो उस वक्त उसकी रगों में ख़ून की जगह मैं दौड़ रहा होता हूँ। पाँच-दस रुपए की ख़ातिर क़त्ल जैसा घिनौना जुर्म कर देता हूँ। गुस्सा दिलाने के लिये

भी पहले वक़्तों में बहुत मेहनत करनी पड़ती लोग ठण्डे थे अब तो जिसे देखो काटने को दौड़ता है जो जितना ज़्यादा गर्म हो उतना ज़्यादा पहुँचा हुआ मशहूर होता है। इस गुनाह में बड़े-बड़े इल्म वाले मेरे काबू में आ जाते हैं जिन पर लोग तन्कीद करने के बजाए हंसकर कह देते है दरअसल इल्म बड़ा गर्म होता है तुममें से कई ऐसे भी है जो गुस्से में पागल होने की बजाए सयाने हो जाते हैं। उन्हें जब भी गुस्सा आता है कमज़ोरी पर ही आता है।

03. जब कोई अल्लाह की राह में कुछ ख़र्च करने लगे तो मैं थपकी देते हुए कहता हूँ अच्छे भले सयाने आदमी हो तुम्हें तो ख़ुद पैसों की बड़ी सख़्त ज़रूरत है क़ारोबार से पैसे निकालोगे तो क़ारोबार के पल्ले में क्या रहेगा। पहले ही से काम ठप्प है, इन्हीं पैसों से बीवी के लिए कोई चीज़ ख़रीदकर ले जा जाओ तो बीवी ख़ुश हो जाऐगी। रंगीन टीवी, वीसीआर, डिश घर के ये सामान पूरे करो दूसरों के बच्चे गाड़ियों में स्कूल जाते हैं तुम्हारे बच्चे पैदल फिर भी अगर बाज़ न आये तो मैं कहता हूँ नमाज़ ख़त्म होगी तो सबके सामने इमाम साहब को देना।

04. ज्योंही किसी ने जेहाद पर जाने का इशारा किया मैं वहाँ अफ़सोस करने पहुँच जाता हूँ कि नेकियां तुम पहले भी करते हो इतना मुश्किल सवाब हासिल करने की क्या ज़रूरत? कि जान ही चली जाए, इतना बड़ा कारोबार कौन सम्भालेगा? बीवी बेवा हो जायेगी, बच्चे यतीम हो जायेंगे। गर्मी बहुत है, सर्दी बहुत है, कारोबारी सीज़न है, सीज़न के बाद चले जाना अभी तुमने देखा ही क्या है?

05. जब कोई दाढ़ी रखने की नीयत करें तो मैं फ़ौरन हमदर्दी जताने पहुंच जाता हूँ ये क्या है? भला कोई उम्र है दाढ़ी रखने की क्या शादी करने का मूड नहीं, तुम्हें तो कोई लड़की देना पसन्द नहीं करेगा। इन वस्वसों से अगर बचकर निकल जाये तो मैं घरवालों के ज़रिये प्रेशर डलवाता हूँ कि मैं तेरा बाप नहीं या मैं तेरी माँ नहीं अगर तू शेविंग न करवाये। ये तो था कुंवारे नौज़वान का मामला रहा शादी-शुदा तो उसे बड़े प्यार से समझाता हूँ कि अल्लाह के बन्दे अजीब काम करने लगे हो क्या तू पसन्द करेगा कि तेरी बीवी जवान नज़र आये और तू बूढ़ा बाल काले होते तो चलो ठीक था मगर अब काफ़ी सफ़ेद हो गये, बाबा लगोगे बाबा। ख़ानदान की नौजवान लड़कियां चाचा कहना शुरू कर देगी। शक्ल-ओ-सूरत के तुम तो पहले ही अच्छे हो ख़ूबसूरती में फ़र्क़ पड़ जायेगा। ये बात चाहे जवान हो या बूढ़ा दोनों कहते हैं कि दाढ़ी रखने को जी बहुत चाहता है मगर ख़ूबसूरती में फ़र्क़ पड़ जाता है, बंदा ख़ूबसूरत नहीं लगता। अच्छा, इतना इन्टरव्यू लिया तुमने मेरा एक बात का जवाब ज़रा तुम भी दो, ये बताओ कि कायनात की सबसे

ख़ूबसूरत-तरीन हस्ती कौनसी है?

सवाल करने वाला- जनाब हज़रत मुहम्मद (ﷺ)।

जवाबे–शैतान : अफ़सोस है तुम्हारे दो सौ नम्बर उम्मती होने पर ईमानदारी से बताओ कि क्या उनकी दाढ़ी नहीं थी?

शैतान का सवाल : अल्लाह ने मुझ इबलीस को तम इन्सानों का दुश्मन करार दिया है, फिर भी तुमने इतनी मेहनत से मेरा इण्टरव्यू लिया; मुझसे इतने सारे सवाल पूछे। मैंने भी तुमको अपना समझते हुए सारे सवालों के जवाब दिये। अगर बुरा महसूस न करो तो एक बात मैं भी पूछ लूं। तुम्हारा मुझसे इन्टरव्यू लेने का मक़सद मेरी समझ में नहीं आ सका। तुम इसका क्या करोगे?

जवाबे–मुस्लिम : **मैं एक लेखक हूँ। मैं तुम्हारी साज़िशों से पूरी क़ौम को ख़बरदार करुंगा। मैं इन सवाल–जवाब को छपवाकर फ़ी–सबीलिल्लाह बंटवाऊँगा।**

यह सुनकर शैतान जोर–जोर से चीखने लगा। ऐ आदम की औलाद! तूने मुझे बेवकूफ़ बनाकर मेरे राज़ जान लिये, मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं। तुम्हारे बाप आदम (अ.) को मैंने ही जन्नत से निकलवाया था, मैं तुम्हें भी जन्नत में जाने नहीं दूँगा।

आख़री बात : दोस्तों! शैतान से इण्टरव्यू लेना यक़ीनन एक ख़याली बात है लेकिन अगर कुर्आनो–हदीस का हम मुतालआ (अध्ययन) करें तो वे सारी बातें आपको मिल जाएंगी जिनका ज़िक्र इस किताब में किया गया है। शैतान हमारा दुश्मन है, वह नहीं चाहता कि हम नेक काम करें और जन्नत के हक़दार बनें। आइये हम सब मिलकर अपने नफ़्स को अल्लाह के हवाले कर दें। सिर्फ़ अल्लाह ही हमको शैतान के शर से बचा सकता है।

रब्बी अऊज़ुबिका मिन हमज़ातिश्शयातीन, व अऊज़ुबिका रब्बी अंय्यहज़रून. (तर्जुमा) : **ऐ रब मैं शैतानों की छेड़छाड़ से तेरी पनाह चाहता हूँ और तेरी पनाह चाहता हूँ कि वो मेरे पास आए।** सूरह (मोमिनून)

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारे गुनाह मुआफ़ करें और शैतान के मक्रो फ़रेब से बचायें। आमीन।

शैतान के शर से बचने की दुआएँ

01. अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम.

पनाह माँगता हूँ मैं अल्लाह की शैतान मरदूद (के शर) से।

02. अऊज़ुबि कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन शर्रा मा ख़लक़.

मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के तमाम कलिमात के ज़रिये हर उस बुराई से जिसको उसने पैदा किया है।

03. उऊज़ुका बि कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् शर्रि कुल्लि शैतानिवं व हाम्मातिवं व मिन् कुल्लि ऐनिल् लाम्माति.

मैं पनाह मांगता हूँ अल्लाह के तमाम कलिमात के ज़रिये हर शैतान की बुराई से और हर तक्लीफ़ देने वाले की बुराई से और नज़र लगने वाली आँख की बुराई से।

04. अऊज़ुबि कलिमातिल्लाहित्ताम्माति मिन् ग़ज़बिहि व शर्रि इबादिहि व मिन् हमज़ातिश्शयातीनि व अंय्यहज़ुरून.

मैं पनाह माँगता हूँ अल्लाह के तमाम कलिमात के ज़रिये उसके ग़ज़ब से और उसके बन्दों की बुराई से और शैतान के वस्वसों से और शैतान के हाज़िर होने से।

05. अल्लाहुम्मा इन्नि अऊज़ुबिक मिनल ख़ुबुसि वल ख़बाइस.

मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ ख़बीस (शैतान) जिन्नों और जिन्नियों से।

06. कुल अऊज़ुबि रब्बिल फ़लक़. मिन शर्रिमा ख़लक़. व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़ब. व मिन् शर्रिन्नफ़्फ़ासाति फिल्उक़द. (सूरह फलक़)

कह दो! मैं पनाह माँगता हूँ सुबह के मालिक की तमाम मख़्लूक़ की बुराई से और अंधेरी रात की बुराई से जबकि छा जाये और उन औरतों की बुराई से जो गाँठों में फूंक मारने वालियाँ है और हसद करने वालों की बुराई से जबकि वह हसद करे।

07. कुल अऊज़ुबि रब्बिन्नास. मलिकिन्नास. इलाहिन्नास. मिन् शर्रिल वस्वासिल ख़न्नास. अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नास. मिनलजिन्नति वन्नास.

कह दो! मैं पनाह माँगता हूँ इन्सानों के रब की। इन्सानों के बादशाह की। इन्सानों के माबूद की। वस्वसा डालने वाले ख़न्नास के फितने से। जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालता है। जो जिन्नों में से भी होता है और इन्सानों में से भी। (सूरह नास)